Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 1636–1640

PRAJAMANDAL MOVEMENT IN THE PRINCELY STATES OF HARYANA: NATURE AND EXPANSE

हरियाणा की रियासतों में प्रजामंडल आंदोलनः स्वरूप एवं विस्तार

Manju [1], Vishal Kumar Sharma [2]

[1] Research Scholar, Department of History and Archaeology, Maharshi Dayanand University, Rohtak, Haryana
[2] Associate Professor, Hindu College, Sonipat, Haryana

ABSTRACT

English: There were many princely states in the area of Haryana such as Jind, Dujana, Pataudi, Jhajjar, Loharu, Kaithal, Rania-Fatehabad, Ballabhgarh, Ladwa, Kunjpura, Budia, Kalsia, Jagadhari, Shahzadpur, Ramgarh, Narayangarh, Badshahpur, Farukhnagar, Kotla, Ghasaeda, Ferozepur Jhirka etc. In 1803, when the British army led by Lord Lake defeated the Maratha army led by Daulatrao Scindia and captured Delhi, British rule was established over almost the entire area of present-day Haryana. The British not only controlled all the estates of the then Haryana according to their own wishes but also installed their loyalists as jagirdars. The non-cooperation movement launched by Gandhiji also had a wide impact on the people of the princely states. The rulers of these princely states were Indians, but they were directly under British rule. Most of the princely states were ruled by autocrats. Due to high taxes, the economic burden on the people was very high, education and social services were backward and civil rights were restricted. In such a situation, Prajamandal movements were started in some princely states which raised their voice for their rights. The present research paper describes the nature and development of the people's movements in the princely states of Haryana.

Hindi: हरियाणा के इलाके में अनेक रियासतें थी जैसे कि जींद, दुजाना, पटौदी, झज्जर, लोहारू, कैथल, रानियां-फतेहाबाद, बल्लभगढ़, लाडवा, कुंजपुरा, बुड़िया, कलसिया, जगाधरी, शहजादपुर, रामगढ़, नारायणगढ़, बादशाहपुर, फरुखनगर, कोटला, घासेड़ा, फिरोजपुर झिरका आदि-आदि। सन 1803 में लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेज फौज ने दौलतराव सिन्धिया की अगुवाई में मराठा फौज को हराकर जब दिल्ली पर कब्जा किया तो वर्तमान हरियाणा के करीब पूरे इलाके पर ब्रिटिश शासन स्थापित हो गया था। अग्रेजों ने तत्कालीन हरियाणा की तमाम जागीरों को अपने हिसाब से न केवल काबू किया बल्कि अपने वफादारों को जागीरदार के तौर पर स्थापित भी किया। गांधी जी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन का व्यापक प्रभाव देशी रियासतों की जनता पर भी पड़ा। इन रियासतों के शासक तो भारतीय थे, लेकिन इन पर प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन था। अधिकांश रियासतों पर निरंकुश शासन था। उच्च करों के कारण लोगों पर आर्थिक बोझ बहुत अधिक था, शिक्षा और सामाजिक सेवाएँ पिछड़ी हुई थीं और नागरिक अधिकार प्रतिबंधित थे। ऐसी स्थिति में कुछ रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन चले जिन्होंने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई। प्रस्तुत शोध पत्र में हरियाणा की देशी रियासतों में हुए जन आंदोलनों के स्वरूप एवं विकास का वर्णन किया गया है।

Keywords: Haryana, Princely States, Praja Mandal Movement, Jind, Nabha, Patiala, Loharu, हरियाणा, देशी रियासतें, प्रजामण्डल आंदोलन, जींद, नाभा, पटियाला, लोहारु

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.3540

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

1.1. प्रजामंडल आंदोलन की उत्पत्ति

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में और 20वीं शताब्दी के पहले तीन दशकों में, देशी रियासतों के शासको के भ्रष्ट प्रशासन के खिलाफ विभिन्न रियासतों में किसान विद्रोह की शुरुआत हुई। लेकिन सभी जगह इन विद्रोहों को शासकों द्वारा ब्रिटिश सेना की सहायता से दबा दिया गया। रियासतों के लोगों के

बीच शिक्षा के प्रसार के कारण और देश में गांधीवादी राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रगति के साथ-साथ एक नया आंदोलन शुरू हुआ। रियासतों के पढ़े लिखे लोगों ने शासको के भ्रष्ट प्रशासन के खिलाफ एकजुट होकर प्रजामंडल आंदोलन की शुरुआत की।1

ब्रिटिश भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन की शुरुआत का असर रियासतों के लोगों पर भी पड़ा। 20वीं सदी के पहले और दूसरे दशक में ब्रिटिश सत्ता से भागकर कई क्रांतिकारी राष्ट्रवादी रियासतों में आए और वहां राजनीतिक गतिविधियां शुरू कीं।

असहयोग और खिलाफत आन्दोलनों के शुरू होने से ब्रिटिश भारत की सीमाओं के पार पूरे भारत की जनता में हलचल मच गई। राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तर्गत रियासतों की प्रजा ने जन संगठन स्थापित किए। राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए रियासतों के लोगों द्वारा शुरू किए गए जन संगठन को ''प्रजा मण्डल या प्रजा परिषद'' कहा जाता था। रियासतों में राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रजा मण्डल आन्दोलन भी कहा जाता है।

दिसंबर 1927 में ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस के गठन के बाद, राज्यों के अंतर्गत भी पीपुल्स कांफ्रेंस का गठन किया गया। इन कांफ्रेंस ने राज्यों के लोगों में अपनी मांगों को संगठित तरीके से प्रस्तुत करने की एक नई उम्मीद जगाई। प्रजामंडलों ने दरबार के सामने विभिन्न मांगें रखीं जैसे कि अवैध वित्तीय वसूली, जबरन श्रम का उन्मूलन, नागरिक अधिकारों की प्राप्ति और व्यस्क मताधिकार के आधार पर जिम्मेदार सरकारों की स्थापना आदि। हालांकि रियासतों के शासक न तो प्रजामंडलों को मान्यता देने के लिए तैयार थे न हीं लोगों की उचित मांगों को स्वीकार करने के लिए। परिणाम स्वरुप समस्या ने एक गंभीर रूप ले लिया और कई रियासतों में व्यापक अशांति उत्पन्न हो गई इसके साथ ही प्रजामंडल आंदोलन शुरू हो गया।2

2. हरियाणा की एतिहासिक पृष्टभूमि

आदिकाल से ही हरियाणा भारतीय संस्कृति और सभ्यता की धुरी रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक संस्कृति इसी प्रदेश में बहने वाली सरस्वती और घग्घर नदियों के आसपास ही फली फूली।3 वैदिक काल से लेकर महाभारत काल तक हरियाणा विभिन्न नामों से जाना जाता रहा। यहीं पर श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया। मुगल काल से ही यह प्रदेश गणतंत्र की अपनी परम्परा को पंचायतों के रूप में सुरक्षित रखें हुए है। 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में यहां रियासतों का उदय हुआ। मुगलों के बाद अंग्रेजों ने भी कुछ रियासतें स्थापित करवा कर इस प्रणाली को और आगे बढ़ाया।4

भारत में अंग्रेजों के जमाने से ही एक छोर से दूसरे छोर तक छोटी बड़ी अनेकों रियासतें फैली हुई थीं। जो राजनीतिक एवं प्रशासनिक रूप से अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करती थी। समस्त हरियाणा भी अनेको रियासतों में विभाजित था। इन रियासतों ने आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान अंग्रेजों को सैनिक सहायता प्रदान की थी।5

'असाइंड टेरिटरी' के क्षेत्र को कंपनी ने सीधे तौर पर अपने नियंत्रण में ले रखा था जो कि दिल्ली से 60 किलोमीटर उत्तर और दक्षिण में स्थित थे। इन क्षेत्रों में पानीपत, सोनीपत, समालखा और हवेली पालम के परगने थे, दक्षिण में पलवल, नूह, नगीना, हथीन, फिरोजपुर झिरका, टपूकड़ा, सोहना और रेवाड़ी के परगने थे। 1809 की अमृतसर समझौते के फलस्वरूप महाराजा रणजीत सिंह ने सतलुज के इस पार के क्षेत्रों पर अपना दावा छोड़ दिया और सतलुज को अपने साम्राज्य की पूर्वी सीमा मान लिया था। अंग्रेजों ने सतलुज के इस पार की सभी रियासतों को ज्यों का त्यों बने रहने दिया।6

सन 1833 के चार्टर एक्ट के अनुसार उत्तर पश्चिमी प्रांत की स्थापना हुई और आगरा को इस प्रांत का सदर मुकाम बनाया गया। इस व्यवस्था के अंतर्गत हरियाणा प्रदेश इस नए प्रदेश के 6 मंडलों में से एक था। एक मंडल को दिल्ली डिवीजन का नाम दिया गया जिसका सदर मुकाम दिल्ली था। दिल्ली डिवीजन में पानीपत, हिसार, दिल्ली, रोहतक और गुड़गांव जिले सम्मिलित किए गए। सन 1857 की जन क्रांति तक हरियाणा प्रदेश उत्तर पश्चिमी प्रांत का भाग रहा।7

20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में पूरे भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध जन आंदोलन चल रहा था। महात्मा गांधी ने कांग्रेस द्वारा चलाए गए आंदोलन को जन आंदोलन बना दिया। जिससे गांवों तक जागरूकता फैली और ग्रामीण लोग भी अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए गांधी जी द्वारा चलाए जा रहे स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए। हरियाणा और भारत की विभिन्न रियासतों में भी जनता ने अंग्रेजी एवं रियासती शासन के विरुद्ध आवाज उठाई। हालांकि इन रियासतों पर भारतीय नरेशों का शासन था फिर भी यह शोषण तथा अत्याचारों में अंग्रेजों से कम नहीं थे।8

हरियाणा में अधिकतर रियासतें देहाती थी तथा बड़े नगरों का अभाव था इसलिए यहां जन जागरण काफी देर से पहुंचा। यूनियनिस्ट पार्टी की सुधारवादी योजना भी इन रियासतों पर लागू नहीं हो सकती थी। हरियाणा की सारी प्रजा अपने शासको से परेशान थी और सुधार चाहती थी। इसलिए 20वीं शताब्दी के पूर्वाद में यहां गांधी जी के जन आंदोलन से प्रभावित होकर लगभग प्रत्येक रियासत में प्रजामंडल आंदोलन का उदय हुआ।9

आरंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भी देशी रियासतों के मामले में दखल देने के खिलाफ थी। वहां कांग्रेस संगठन भी नहीं बन सकते थे। रियासतों की जनता को सलाह दी गई थी कि वे चाहे तो अलग से अपने प्रजामंडल बनाकर आंदोलन कर सकते हैं जिसके कारण कई देशी रियासतों में प्रजामंडल बन गए। ऑल इंडिया स्टेट पीपुल्स कांफ्रेंस और 1928 में गठित पंजाब रियासती प्रोविंशियल प्रजामंडल ने हरियाणा की रियासतों में अपनी शाखाएं स्थापित की। इन संगठनों ने रियासतों की प्रजा को एकजुट करने तथा उन्हें आंदोलन के लिए तैयार करने में सराहनीय योगदान दिया।10

कांग्रेस के नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू देशी रियासतों की प्रजा के सुख-दुख में हिस्सा लेने के पक्ष में थे तथा शेष भारत की तरह हरियाणा की देशी रियासतों में सुधार करवाना चाहते थे। जब पंडित नेहरू 1929 में कांग्रेस के अध्यक्ष बने तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि देशी रियासतों को शेष भारत से अलग नहीं रखा जा सकता। उनके प्रयासों से देशी रियासतों के मुद्दों को कांग्रेस ने अपनी नीतियों में सम्मिलित किया। 1938 में लुधियाना में पंजाब के प्रजामंडल ने एकत्रित होकर कॉन्फ्रेंस की। इस कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता पंडित नेहरू ने की। उन्होंने यह कहकर कि 'देशी रियासतों को शेष

भारत से अलग नहीं रखा जा सकता' कांग्रेस नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया।11 इसमें निर्णय लिया गया कि प्रत्येक रियासत में प्रजामंडल आंदोलन को तेजी से चलाया जाए। इस कांफ्रेंस से हरियाणा की रियासतों की प्रजा में जोश और जागरूकता आई और यह आंदोलन पूरे जोर-शोर से चला। शीघ्र ही रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन और तेज हो गया। इस काल में हरियाणा की दुजाना, पटौदी, लोहारू और जींद रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन चला।12

3. हरियाणा की विभिन्न रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन की शुरूवात

दोजाना

24 गांवों की यह रियासत 1805 में आंग्ल-मराठा युद्ध के पश्चात बनी थी। यहां का शासक मोहम्मद इक्तदार अली खान जनता पर बहुत अत्याचार करता था जिसके कारण जनता बेहद असंतुष्ट थी। सन् 1945 में दोजाना की असंतुष्ट प्रजा ने प्रजामंडल का गठन किया जिसका केंद्र नाहड़ में रखा गया। राव देवकरण सिंह इसके प्रधान बने और राव सरदार सिंह को सेक्रेट्री बनाया गया। राव नेकीराम, प० हरिराम, राव श्योचंद, प० हरिराम आर्य, प० ताराचंद, मंगतूराम, महाश्य रामजीलाल आदि प्रजामंडल के कार्यकर्ता थे नवंबर 1946 में प्रजामंडल ने रियासत में जबरदस्त आंदोलन चलाया। किसानों ने शासन को कर देने से इंकार कर दिया और अन्य वर्गों ने भी असहयोग किया। इससे नवाब बड़ा बेचैन हो उठा और उसने आंदोलन को असफल करने के लिए सख्त कदम उठाए। सर्वप्रथम नबाव ने प्रजामंडल के नेताओं राव देवकरण सिंह, राव सरदार सिंह, प० हरिराम, और रामजीलाल आदि को गिरफ्तार करवा दिया। शेष कार्यकर्ताओं के लिए वारंट काट दिए और प्रजा को भयभीत करने के लिए हर संभव प्रयत्न किए। किंतु नवाब की इन कार्यवाहियों से आंदोलन दबा नहीं बल्कि और जोरों से चल पड़ा। सारे राज्य में जलसे, जुलूस के माध्यम से लोगों ने अपने नेताओं की गिरफ्तारी और पुलिस के आतंक के विरुद्ध रोष प्रकट किया। नवाब को चेतावनी दी: यदि नेताओं को शीघ्र न छोड़ा गया तो जन सत्याग्रह आरंभ रह जाएगा। नवाब शीघ्र ही जन आंदोलन से घबरा उठा और 8 दिसंबर 1946 में उसने जनता के समक्ष घुटने टेक दिए। उसने बंदी नेताओं को बरी कर दिया और उनकी समस्त मांगे मान ली। लगान कम कर दिया और स्कूल, सड़क, अस्पताल और अन्य सुविधाएं देने का वचन दिया। किंतु इससे पूर्व की वह इन सब बातों को पूरा कर पाता भारत स्वतंत्र हो गया नवाब पाकिस्तान चला गया और रियासत का विलय रोहतक जिले में हो गया।13

पटौदी

दोजाना की तरह पटौदी रियासत भी दूसरे आंग्ल मराठा युद्ध के बाद 1805 में अस्तित्व में आई थी। अब वहां मुहम्मद इफ्तिखार अली खान का राज्य था जो कि एक अति सामान्य व्यक्ति था। उसने भी अपनी रियासत में न स्कूल खोले, न अस्पताल बनवाए, न नहरें खुदबाई, न सड़क बनवाई। उसका भूमि कर भी अत्यधिक बढ़ा हुआ था। वह अपना निजी कार्य लोगों से बेगार के रूप में करवाता था। जब समस्त हरियाणा में कांग्रेस के प्रयत्नों से राष्ट्रीय आंदोलन तेज गति से चल पड़ा और लोग अपने कष्टों के निवारण के लिए प्रयत्न करने लगे तो पटौदी के लोग भी आंदोलन में शामिल हो गए। भारत छोड़ो आंदोलन, 1942 के पश्चात पटौदी रियासत की जनता ने प्रजामंडल बनाकर नवाब के विरुद्ध विधिवत्त कार्यवाही शुरू कर दी। इस आंदोलन का नेतृत्व गौरीशंकर वैद्य ने किया। पंडित बाबू दयाल शर्मा, ठाकुर राम सिंह, श्री नंदकिशोर, श्री छोटेलाल आदि उनके सहायक थे। नवाब ने प्रारंभ में आंदोलन को सख्ती से दबाना चाहा। उसने सन 1946 के आरंभ में गौरीशंकर को कैद में डलवा दिया और उसकी समस्त जायदाद नीलाम करवा दी। नेताओं की गिरफ्तारी के विरुद्ध रियासत में प्रबल प्रचार हुआ और समस्त जनता सत्याग्रह करने पर उतर आई। गुड़गांव के कांग्रेसी नेता राव गजराज सिंह आदि संघर्ष में लोगों का नेतृत्व करने के लिए आ गए। नवाब इन गतिविधियों से विचलित हो गया और उसने सब राजनीतिक बंदियों को तुरंत रिहा करने की आज्ञा दे दी। उसने लगान और दूसरे कर कम करने का आश्वासन भी दिया। स्वतंत्रता के पश्चात रियासत का गुड़गांव जिले में विलय हो गया।14

लोहारू

लोहारू हिसार जिले में एक छोटी सी रियासत थी यहां बहुत लंबे समय से लोगों पर अत्याचार किया जा रहा था। भारी कर और बेगार के अतिरिक्त वहां जनता की धार्मिक स्वतंत्रता पर भी नवाब मिर्जा अमीनुद्दीन अहमद ने रोक लगा रखी थी। नवाब के अत्याचारों के विरुद्ध सबसे पहले आर्य समाज ने आवाज उठाई किंतु यह आवाज शुरू-शुरू में धार्मिक स्वतंत्रता के लिए ही उठाई गई थी। इसके साथ राजनीतिक और आर्थिक मामले नहीं जुड़े थे। किंतु थोड़े समय बाद ये दो विषय एक ही आंदोलन के भाग बन गए।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोहारू की जनता ने संगठित होकर आंदोलन चलाने की योजना बनाई। सूबेदार दिलसुख, ठाकुर भगवंत सिंह, चैधरी मोहर सिंह, श्री नाथूराम, चैधरी गंगा सहाय, श्री बूजाराम, चैधरी चंदगी राम, श्री शंकर लाल, पंडित सत्यव्रत आदि नेताओं ने बीकानेर में प्रजामंडल आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी कर्मानंद और स्वामी सच्चिदानंद से मिलकर यहां भी प्रजामंडल स्थापित कर दिया।14 हिसार के प्रसिद्ध नेता पंडित नेकीराम शर्मा भी यहां समर्थन करने आ गए जिसके कारण लोहारू में खूब जोरों शोरों से प्रजामंडल आंदोलन चला। नवाब इससे बहुत परेशान हो उठा।15

नवाब ने अपना सामंती रूप दिखाते हुए प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं को बागी करार करते हुए गिरफ्तार कर लिया। साथ ही कार्यकारिणी के दूसरे सदस्यों और लगभग 50 प्रमुख सदस्यों की गिरफ्तारी के वारंट भी जारी कर दिए। इस खबर से लोगों में और उत्साह बढ़ गया इस गांव-गांव में किसानों के समूह जत्थे बना कर सत्याग्रहियों के रूप में लोहारू आने लगे। अगले दिन दोपहर तक लगभग 10000 आदमी नवाब के किले के सामने इकट्ठे हो गए। नवाब लोगों के विशाल जन समूह को देखकर बेचैन हो गया। नवाब साहब जेल में गया और कार्यकर्ताओं से मिला और उनको मुक्त करने को कहा और साथ ही उनको प्रजा को शांतिपूर्वक लोटा ले जाने के लिए कहा। लेकिन इन व्यक्तियों ने सारा भार प्रजामंडल की कार्यकारी के सदस्यों पर डाल

दिया। कार्यकारिणी ने नवाब के आगे पांच मांगे रखी जिनको नवाब ने तुरंत स्वीकार कर लिया। इस प्रकार प्रजामंडल आंदोलन समाप्त हो गया और स्वतंत्रता के बाद रियासत का विलय हिसार जिले में कर दिया गया।16

जींद

सन 1939 में पंडित देवी दयाल के प्रयासों से जींद में प्रजामंडल की स्थापना की गई जिसमें श्री हंसराज रहबर, श्री बनारसी दासगुप्त और श्री राजेंद्र कुमार जैन का कार्य अत्यधिक सराहनीय रहा। श्री रामकृष्ण, पंडित शिवकरण, श्री मेहताब सिंह, श्री मंशाराम, श्री चिरंजी लाल, श्री लालचंद वर्मा, बाबू इंद्र सिंह, श्री बाबूराम, श्री साधुराम, चैधरी मंगल राम आदि ने भी इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन लोगों के प्रयासों के कारण इस रियासत में जन जागृति के प्रबल लक्षण दिखाई देने लगे।17

प्रजा मंडल द्वारा प्रस्तुत 11 प्रमुख मांगों में राजा की देखरेख में एक उत्तरदायी सरकार की मांग प्रमुख थी। राष्ट्रीय आंदोलन के उभार और अन्य रियासतों में प्रजामंडल की बढ़ती हुई गतिविधियों का दबाव इतना बढ़ गया था कि जींद के महाराजा को 65 सदस्यों की एक विधानसभा की घोषणा करनी पड़ी। विधानसभा में महाराजा के वफादारों को नामित किए जाने के बावजूद प्रजामंडल के नेता के रूप में नंबरदार मंगलाराम डालावास, ला. नत्थूराम सफीदों, वैद्य चिरंजीलाल संगरूर, चै. हीरासिंह चिनारिया और चै. निहाल सिंह तक्षक विधानसभा सदस्य के रूप में चुने गए।18

प्रजामण्डल द्वारा उत्तरदायी सरकार की मांग जोर पकड़ती गई। इसी सिलसिले में 23-24 नवंबर 1940 को प्रजामंडल के दादरी में आयोजित दूसरे सम्मेलन में संगरूर, जींद, दादरी, नाभा आदि इलाकों से भारी भीड़ जुटी। अगले ही दिन महाराजा रणवीर सिंह ने चै. हीरा सिंह चिनारिया को गिरफ्तार कर लिया और कुछ दिनों बाद चै. मनसाराम त्यागी, चै. महताब सिंह, ला. राजेंद्र कुमार जैन, मा. बनारसी दास गुप्ता, नंबरदार मंगलाराम को गिरफ्तार कर के संगरूर के किले में बंद करवा दिया। नतीजन जनता का प्रोटेस्ट तेज हो गया। जेल में सजा काट कर या नजरबंदी से रिहा होकर ये तमाम नेता फिर से सक्रिय हो गए। वही।19

सन 1946 में उदयपुर में प. जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में ऑल इंडिया स्टेट्स पीपल कांफ्रेंस में दादरी हल्के से चै. हीरा सिंह चिनारिया, नंबरदार मंगलाराम, ला. राजेंद्र कुमार जैन और मास्टर नानक चंद शामिल हुए। इसी वर्ष सन् 1946 में जींद की रियासती विधानसभा चुनावों में प्रजामंडल की ओर से चै. हीरा सिंह चिनारिया और मा. बनारसी दास गुप्ता निर्विरोध चुने गए।

इसी दौरान ला. रामकिशन गुप्ता भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण दो साल की सजा काटकर लाहौर से दादरी आ गए थे और सन् 1945 के अन्त तक आजाद हिंद फौज के जवानों को भी जेल से रिहा कर दिया गया था। इन सब ने मिलकर गांव-गांव में प्रजामण्डल की इकाइयां स्थापित करना शुरू कर दी थी।20

सन् 1946 में जींद में रियासत के स्तर का प्रजामण्डल का चुनाव करवाया गया जिसमें चै. हीरा सिंह चिनारिया को अध्यक्ष और ला. रामकिशन गुप्ता को महामंत्री चुना गया। इसके बाद दादरी में स्टेट प्रजामंडल का पहला अधिवेशन हुआ जिसमें हजारों लोगों ने हिस्सा लिया, राजा के खिलाफ आंदोलन का ऐलान हुआ, करो या मरो का नारा दिया गया, डायरेक्ट एक्शन दिवस मनाया गया और इस आंदोलन में धारा 144 को तोड़ दिया गया। महाराजा ने समझौते के रूप में मंत्रिपरिषद का गठन किया और प्रजामण्डल के दो प्रतिनिधियों को मंत्रीपद की शपथ दिलाई।21

पटियाला

आधुनिक महेंद्रगढ़ जिले का नारनौल क्षेत्र पटियाला राज्य के अंतर्गत आता था। अन्य रियासतों की तरह यहां भी जनता बुरी तरह पीड़ित थी। उनकी कमर भारी भरकम टैक्सों और बेगार के बोझ से टूट चुकी थी। उन्हें समाज कल्याण की सुविधा न के बराबर मिलती थी। सन् 1945 में प्रजामंडल बनाकर यहां की जनता ने महाराज का ध्यान इन कठिनाइयों की ओर आकर्षित किया। किंतु महाराज ने उसे अनदेखा कर दिया साथ यह चेतावनी भी दे दी कि यह अंग्रेजी राज्य नहीं है जहां कांग्रेस की ज्यादतियों को बर्दाश्त किया जाएगा। यहां राज्य विरोधी कार्य करने वालों को ऐसा पाठ पढ़ा दिया जाएगा कि आने वाली पीढ़ियां भी उसे याद रखेंगी। अंत में महाराज ने कहा कि मैं एक सैनिक हूं मेरी बात रूखी है और मेरी गोली सीधी चलती है।22

महाराज की चेतावनी का जनता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने अपने नेताओं श्री राम किशोर, श्री मातादीन, श्री अयोध्या प्रसाद, सुश्री कमला देवी, श्री बनवारी लाल, राव माधोसिंह, रामेश्वर सिंह आजाद, चैधरी दुलीचंद, श्री रामचरण मित्तल, श्री राम कौशिक के नेतृत्व में जोरदार आंदोलन छेड़ दिया जिसके परिणाम स्वरुप महाराज को जनता के समक्ष अंततः झुकना पड़ा।23

नाभा

आधुनिक जिला महेंद्रगढ़ का अधिकांश भाग- बावल, कनीना, अटेली, उन दिनों नाभा के राजा प्रताप सिंह की रियासत में पड़ता था। यहां भी दूसरी रियासतों की तरह ही जनता पर भारी कर लगे हुए थे। राजा उनसे बेगार लेता था और उन्हें कोई सुख-सुविधा प्राप्त नहीं थी। विश्व युद्ध के उपरांत दूसरी रियासतों की तरह महेंद्रगढ़ में भी राजनीतिक चेतना आई और यहां प्रजामंडल स्थापित हुआ। कोटी के मास्टर श्याम मनोहर, श्री रामेश्वर दयाल, श्री मातादीन भगत, श्री रामेश्वर सिंह तथा राव ईश्वर सिंह आजाद ने यहां आंदोलन चलाने में विशेष योगदान दिया। सन 1946 के मध्य में प्रताप सिंह ने प्रजामंडल आंदोलन को कुचलने की चेष्टा की तथा यहां के सब नेताओं को गिरफ्तार कर लिया । जनता में इस बात को लेकर बड़ा रोष उठा और उन्होंने 'नाभा वाले बावल छोड़ो' आंदोलन शुरू कर दिया। थोड़े समय पश्चात ही राजा ने फैसला कर लिया और सब नेताओं को रिहा करके उनकी बातें मान लीं।24

4. निष्कर्ष

इस प्रकार, उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि हरियाणा की लगभग सभी रियासतों में शासकों के दमनकारी और अत्याचारी शासन के विरुद्ध प्रजामंडलों के नेतृत्व में आंदोलन चलाए गए। प्रजामंडल आंदोलन ने मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक दोनों ही दृष्टियों से हरियाणा की रियासतों के लोगों के जीवन में उल्लेखनीय परिणाम उत्पन्न किए। जहां तक देशी रियासतों के लोगों का संबंध है, इसने लोगों में एक नई राजनीतिक जागृति ला दी, जिन्होंने निरंकुश शासकों के प्रति अपने पारंपरिक भय को त्याग दिया। रियासतों के सरदारों ने प्रजामंडल आंदोलनों को दबाने के लिए सर्वोच्च शक्ति के सक्रिय समर्थन से विभिन्न दमनकारी उपाय अपनाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे आंदोलन को मजबूती से दबाने में सफल रहे, लेकिन वे आंदोलनकारियों की लड़ाकू भावना को रोकने में असफल रहे। इसने पूरे भारत का ध्यान आकर्षित किया। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, पट्टाभि सीतारमैया और अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने रियासतों के मामलों में गहरी रुचि दिखाई और लोगों की शिकायतों और न्यायोचित मांगों के निवारण के लिए रियासतों के प्रमुखों और ब्रिटिश सरकार पर दबाव डाला।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

S. Pradhan, Agrarian and Political Movement New Delhi, 1986, pp. 90-91.
Kishor Chandra Mishra, Prajamandal Movement in the Feudatory States of Western Odisha, Proceedings of the Indian History Congress, 2008, Vol. 69 (2008), pp. 543-553.
Devishankar Prabhakar, Swadhinata Sangram Aur Haryana, Umesh Prakashan, Delhi, 1976, pp. 18-21.
Ejaz Ahmad, Haryana ka Itihas, Kalpana Prakashan, Delhi, p.115.
Achievements, Collections and Treaties, Engagements and Sanadsru Relative to India and Neighbouring Countries, Calcutta, 1832, Vol. 6, pp. 40-47.
Devishankar Prabhakar, Swadhinata Sangram Aur Haryana, Umesh Prakashan, Delhi, 1976, p. 31.
Devishankar Prabhakar, p. 38-39.
Aijaz Ahmad, ibid, p. 243.
Ibid, p. 243.
Lalita Kumari, Description and Socio-economic Condition of Indian Princely States: With Special Reference to Haryana, Unpublished PhD Thesis, Indira Gandhi University, Mirpur, Rewari, 2018-19, p. 9.
Kishor Chandra Mishra, ibid.
K. C. Yadav, History of Haryana (1803-1966), Part-3, Macmillan India Limited, Delhi, 1981, p. 194.
Yashpal Gulia, Princely History of Haryana, Haryana Granth Academy, Panchkula, 2012, p. 59-62.
Rajesh Gupta, Indian Independence Movement and Vaishya Society of Haryana (1919-1947), Alpha Publication, New Delhi, 2012, p. 179.
K.C. Yadav, History of Haryana Pradesh, Manohar Publications and Distributors, New Delhi, 1990, p.346.
Chandr Bhan Obara, History of Loharu, Chandra Bhan Sheoran Obara Tehsil Loharu, District Bhiwani (Haryana), 1997, p.93-94.
Budh Prakash, History of Haryana: A Survey, Haryana Sahitya Academy, Chandigarh, 1989, p. 196-97.
Ibid, p. 197.
Yashpal Gulia, Ibid, 89-100.
Ibid.
Budh Prakash, Ibid, p.197.
Ibid, p.198.